ए अजवालूं जीवने करे, जे जीव घर भणी पगला भरे।
पोते पोतानी पूरे साख, ए तारतम तणो अजवास।। २५ ।।

रास की वाणी के ज्ञान से जीव को घर का प्रकाश (उजाला) मिल जाता है और वह घर की तरफ जाता है। तारतम के प्रकाश से उसे स्वयं अपने अन्दर साख (साक्ष्य) मिलती है।

ते लई धणी आव्या आंहें, साथ संभारी जुओ जीव मांहें।
एणे घरे तेडे आ वल्लभ, बीजाने ए घणूं दुर्लभ।। २६ ।।

उसको लेकर धनी हमारे बीच में आए हैं। इसलिए, हे साथजी! इस वाणी को याद कर जीव में देखो। इस वाणी से धनी घर बुलाते हैं। यह दूसरों को मिलना दुर्लभ है।

बीजा कहूं छूं एटला माट, जे माया भारे करो छो साथ।
तारतम पख बीजो कोय नथी, एक आव्या छो तमे घेर थकी।। २७ ।।

हे सुन्दरसाथ! दूसरा शब्द इसलिए कहा है कि तुम माया को जोर से पकड़ कर बैठ गए हो। तारतम के विचार से तुम ही घर (परमधाम) से आए हो और दूसरा कोई नहीं आया।

आ माया कीधी ते तम माट, तारतम मांहें पाडी वाट।
एणी वाटे चालिए सही, श्री वालाजीने चरणज ग्रही।। २८ ।।

यह माया तुम्हारे लिए ही बनाई है। इस माया में तारतम से ही घर का रास्ता खुला है। इसलिए वालाजी के चरण को ग्रहण कर इसी रास्ते पर चलें।

एह चरन छे प्रमाण, इंद्रावती कहे थाओ जाण।
तमे वचनतणा लेजो अर्थ, आपण जीवनो ए छे ग्रथ।। २९ ।।

वालाजी के यह चरण ही हमारा मूल खजाना है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इन वचनों को जानकर इनके अर्थ को ग्रहण करो।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। ९९० ।।

एक सौ आठ पक्ष का सार

हवे वली कहूं ते सुणो, अठोतर सो पखज तणो।
ए विचार जो जो प्रमाण, ऐहेनो सार काढूं निरवाण।। १ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, एक सौ आठ पक्ष का वर्णन करती हूं, सो सुनो। इन विचारों को प्रमाण के साथ देखना, इनका सार निकाल कर मैं बताती हूं।

माया जीव कोई कोई छे समरथ, ते दोड करे छे कारण अरथ।
निसंक आपोपा नाख्या जेणे, निहकर्म मारग लीधां तेणे।। २ ।।

माया में कोई-कोई समर्थ जीव है। वह भी धन के लिए ही दौड़ रहा है। जिन्होंने अपने आपको कुर्बान कर दिया है वह निष्काम मार्ग पर चले।

पुष्ट मरजाद ने परवाह पख, एह तणी कीधी छे लख।
ते वेहेची कीधा नव भाग, चढे पगथी लई वेराग।। ३ ।।

पुष्ट, मर्यादा और प्रवाह तीन पक्ष हैं। इनको देखकर समझना है। इनको बांटकर नौ भाग किए (हर एक के तीन तीन)। जो इन पर चले उनको संसार से वैराग्य हो गया।

Nijanand App

वली कीधा वीस ने सात, चढतो जाय लिए एणी भांत।
एक्यासी पख केहेवाय, ते वैकुंठमां पोंहोंतो थाय।।४।।

इसी विधि से एक के (फिर तीन तीन किए) सत्ताईस भाग हुए। इस तरह से इनकी विचारधारा बढ़ती जाती है। फिर तीन तीन भाग करने से इक्यासी पक्ष हो गए। जिन्होंने इनको समझ लिया उनकी पहुंच बैकुण्ठ तक हो गई।

हवे पख व्यासिमो जे कह्यो, वल्लभाचारजे ते ग्रह्यो।
स्यामा वल्लभी एथी जोर, पण बंने रह्या इंडानी कोर।।५।।

बयासीवां पक्ष वल्लभाचार्य ने लिया है। इनसे अधिक श्यामा वल्लभी मत वालों ने ग्रहण किया, किन्तु दोनों ही ब्रह्माण्ड के किनारे पर (नारायण तक) रह गए।

छेक इंड मांहें कीधूं सही, पण अखंड ते लई सक्यो नहीं।
पाछा वली पडया प्रतिबिंब, एहोनी तां एह सनंध।।६।।

इन्होंने इस ब्रह्माण्ड को फोड़ा तो अवश्य, किन्तु अखण्ड का ज्ञान ले नहीं सके। बात तो यह अखण्ड ब्रज और रास की ही करते हैं, परन्तु घटाते इसे प्रतिबिम्ब लीला पर हैं जो इस ब्रह्माण्ड में हुई।

ए ऊपर वली पख छे एक, सांभलो तेहेनुं कहुं विवेक।
त्रासिमो पख प्रमांण, जे वासना पांचो ग्रह्यो निरवाण।।७।।

इस पर भी एक पक्ष और है, जिसका विवरण सुनो। इस तिरासीवें पक्ष को अक्षर की पांच वासनाओं ने ग्रहण किया।

पांचे नाम कहूं प्रगट, दऊं सिखामण जाणी घरवट।
नहीं तो प्रबोध स्या ने कहुं, श्री वालाजीना चरणज ग्रहूं।।८।।

इन पांचों के नाम मैं प्रकट करती हूं और समझाकर घर का रास्ता बताती हूं। यदि घर का रास्ता न बताना हो तो सिखापन की आवश्यकता ही क्या है? वालाजी के चरणों को ग्रहण करके स्वयं आनन्द लेती हूं।

पण साथ माटे कहूं फरी फरी, हवे पांचे नाम जो जो चित धरी।
एक भगवान जी वैकुंठनो नाथ, महादेवजी पण एणे साथ।।९।।

परन्तु सुन्दरसाथ के लिए मैं बार-बार कहती हूं। इन पांचों के नाम चित्त में धारण कर लेना। एक भगवानजी बैकुण्ठ के स्वामी हैं। इनके साथ महादेवजी को भी गिनना।

सुकजी ने सनकादिक बे, वली कबीर भेलो मांहें ते।
लखमी नारायण भेला अंग मांहें, एहनो विचार कांई जुओ न थाय।।१०।।

शुकदेव और सनकादिक दो हैं। कबीर भी इनमें शामिल हैं। लक्ष्मीनारायण इनके ही अंग हैं और इनमें शामिल हैं। इन सबके विचार एक से ही हैं। शुकदेव, सनकादिक, कबीर, शिवजी और नारायण भगवान जिनमें भगवान विष्णु और लक्ष्मीजी शामिल हैं।

ते माटे ए वासना पांच, इंडू फोडी निकली जुओ द्रष्टांत।
ए पुरुख प्रकृति ओलंघी ने गया, अछर मांहें जई ने भेला थया।।११।।

यह पांचों पुरुष प्रकृति को उलंघ कर आगे निकले और अक्षर में मिल गये (योगमाया तक का वर्णन किया)।

Nijanand App

ए वचन पाधरा प्रगट कहे, जाण होय ते जोईने लहे।
पखपचवीस ए ऊपर जेह, तारतमना वचन छे तेह।। १२ ।।

यह वचन बिल्कुल सीधे कहे हैं। जानना हो तो पहचान कर ग्रहण कर लेना। इनके ऊपर जो पच्चीस पक्ष हैं, इनकी जो पहचान है वही तारतम है।

एह वचनो मांहें श्री धाम, धणी आपणा ने साथ सर्वेस्थान।
ए तारतम तणो अजवास, धणी बेठा मांहें लई साथ।। १३ ।।

इन वचनों में (पच्चीस पक्ष हैं) परमधाम श्री धाम धनी तथा बारह हजार सुन्दरसाथ की तथा सब खेलने के स्थान की तारतम से पहचान होती है। जहां धनी सुन्दरसाथ को लेकर बैठे हैं (मूल मिलावा)।

हवे कां नव ओलखो रे साथ सुजाण, घणूं तेहेने कहिए जे होय अजाण।
वचिखिण छो तमे प्रवीण, गलजो जेम अगिन सूं मीण।। १४ ।।

हे मेरे जानकार सुन्दरसाथजी! तुम क्यों नहीं देखते? ज्यादा तो उसको कहा जाए जो नासमझ हो। तुम तो चतुर और बुद्धिमान हो। इस ज्ञान में मोम की तरह पिघल जाना (गल जाना)।

सनेह सों सेवा करजो धणी, गलित चित थई अति घणी।
तमे सेवाए पामसो पार, धणीतणा वचन निरधार।। १५ ।।

बड़े प्यार से मगन होकर धनी की सेवा करना। तुम सेवा से ही पार पाओगे। ऐसा धनी के वचनों में साफ कहा है।

पाछला साथ छे ते आवसे केम, ते जोसे प्रकास तणा वचन।
चरणे छे ते तो आव्या सही, पण हवे आवसे वचन प्रकास ना ग्रही।। १६ ।।

पीछे के सुन्दरसाथ प्रकाश की वाणी को देखकर आएंगे। जो चरणों में हैं वह तो आ ही गए हैं, परन्तु अब पीछे आने वाले सुन्दरसाथ प्रकाश वाणी को ग्रहण कर आएंगे।

धणीतणा वचन ग्रह्या मांहें रास, पाछला पार उतारवा साथ।
आवसे साथ एणे प्रकास, अंधकारनो कीधो नास।। १७ ।।

धनी के वचनों को हमने रास में ग्रहण किया, ताकि पीछे के सुन्दरसाथ को पार उतरने का रास्ता मिले। इस तरह से सुन्दरसाथ आएंगे और अन्धकार मिट जाएगा।

आवसे साथ सकल परवरी, रासतणा वचन चित धरी।
एह वचन हवे केटला कहूं, आ लीलानो पार नव लहूं।। १८ ।।

सब सुन्दरसाथ रास के वचनों को चित्त में धारण कर माया से छुटकारा पाकर आएगा। अब और कितना कहूं? इस लीला का पार नहीं है।

ए वचन आंहीं छे अपार, पण साथ केटलो करसे विचार।
ते माटे कांई घणूं नव केहेवाय, आ तां पूरतणों दरियाय।। १९ ।।

यह वचन यहीं पर बेशुमार हैं, परन्तु साथ कितना विचार करके देखेंगे। इसलिए अब ज्यादा नहीं कहा जाता। नहीं तो यह दरिया की बाढ़ के समान है।

Nijanand App

एनूं एक वचन विचारसे रही, ते ततखिण घर ओलखसे सही।
घरनी जे होसे वासना, नहीं मूके ते वचन रासना।। २० ।।

जो भी एक वचन का विचार कर लेगा वह तुरन्त ही घर की पहचान कर लेगा। अपने घर की जो वासना होगी (आत्मा होगी) वह रास के वचनों को नहीं छोड़ेगी (ब्रज से रास में जाते समय का ढंग नहीं छोड़ेंगे)।

खरी वस्त जे थासे सही, ते रेहेसे वचन रासना ग्रही।
जेम कहूं छे करसे तेम, ते लेसे फलतणो तारतम।। २१ ।।

जो अपनी परमधाम की ब्रह्मसृष्टि होगी, वह रास के वचन को अमल में लाएगी। माया छोड़ने का जो रास्ता बताया है, उस रास्ते पर चलेगी। वही तारतम का फल लेगी।

इंद्रावती कहे सुणजो साथ, वचन विचारे थासे प्रकास।
प्रकास करीने लेजो धन, जे हूं तमने कह्या वचन।। २२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे साथ! सुनो, इन वचनों से ज्ञान हो जाएगा। ज्ञान से अपना धन (परमधाम और वालाजी) लेना। इसलिए तुमको यह वचन कहे हैं।

।। प्रकरण ।। ३४ ।। चौपाई ।। १०१२ ।।

गुणनी आसंका

हवे कांईक हूं मारी करूं, नहीं तो तमने घणुए ओचरूं।
वली एक कहूं वचन, रखे आसंका आवे मन।। १ ।।

अब तो मैं कुछ अपनी कहती हूं। नहीं तो तुमको अधिक समझाना पड़ेगा। दुबारा एक वचन कहती हूं, जिससे तुम्हारे मन के संशय मिट जाएं।

में धणीतणा गुण लखया सही, एक आसंका मारा मनमां थई।
जे ऊंडा वचन कह्या निरधार, साथ केम करसे विचार।। २ ।।

धनी के गुण लिखते समय मेरे मन में एक संशय हुआ कि जो गहरे वचन मैंने कहे हैं, उनका सुन्दरसाथ विचार कैसे करेगा?

जिहां लगे जीव न पूरे साख, तो भले प्रबोध दीजे दस लाख।
एक वचन नव लागे केमे, जिहां लगे जीव न समझे मने।। ३ ।।

जब तक जीव को भरोसा नहीं हो जाता, तब तक दस लाख बार समझाएं, क्या होगा? जब तक जीव मन से समझ नहीं लेगा, तब तक एक वचन का भी असर नहीं होगा (चोट नहीं लगेगी)।

ते माटे एम थाय अमने, रखे आसंका रहे तमने।
एक परवाही वचन एम कहे, मुखथी कहे पण अर्थ नव लहे।। ४ ।।

इस वास्ते मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हें किसी प्रकार का संशय न रह जाए। वैसे तो माया के जीव भी मुख से कहते हैं, पर वह उनके अर्थ (मायने) नहीं समझते।

Nijanand App